भिवानी के गौरव

www.ebhiwani.com

चौधरी बंसीलाल

चौधरी बंसीलाल का जन्म हरियाणा के एक जाट परिवार में भिवानी में हुआ था। आपने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में की। आजादी के बाद आपने 1968-75, 1985-87, 1996-99 के दौरान हरियाणा के मुख्यमंत्री का दायित्व निभाया। मुख्यमंत्री के रूप में हरियाणा के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ बनाने में आपके योगदान को आज भी याद किया जाता है। हाइवे टूरिज्म को बढ़ावा देने में आपने विशेष भूमिका निभायी। आगे चलकर इस विचार को और कई राज्यों ने अपनाया। राज्य के सभी गांवों का विद्युतीकरण आपके प्रयासों का ही परिणाम है। यही कारण है कि आपको हरियाणा के वास्तुकार की संज्ञा दी जाती है।

चौधरी बंशीलाल राज्य विधानसभा के लिए सात बार चुने गए। लोकसभा में भी आपने हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया। केन्द्र में रक्षामंत्री और रेलवे एवं यातायात मंत्री के रूप में आपने अपनी अमिट छाप छोड़ी। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी और उनके पुत्र संजय गांधी के करीबी के रूप में भी आपने कांग्रेस को अपनी सेवाएं प्रदान की। सन् 1996 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से मनमुटाव होने के बाद आपने हरियाणा विकास पार्टी की स्थापना की और शराबबंदी के नारे के साथ हरियाणा में अपनी सरकार बनायी।

चौधरी जी ने पंजाब यूनिवर्सिटी ला कालेज, जालंधर में अध्ययन किया। 1972 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय और हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने आपको डाक्टर की मानद डिग्री से सम्मानित किया। आपने विश्व के बहुत से देशों की यात्रा की जिनमें प्रमुख देश हैं- म्यांमार, अफगानिस्तान, पूर्व सोवियत संघ, मारिशस, तंजानिया, जाम्बिया, सेशेल्स, यूनाइटेड किंगडम, कुवैत, ग्रीस, पश्चिम जर्मनी, नीदरलैंड, बेल्जियम, फ्रांस और इटली आदि।

28 मार्च 2006 में आपका नई दिल्ली में निधन हो गया।

श्री बनारसी दास गुप्ता

बाबू जी के नाम से मशहूर श्री बनारसी दास गुप्ता जी का जन्म 5 नवम्बर, 1917 को तत्कालीन पंजाब के जींद जिले के मानेहरू गांव में लाला रामसरूप दास जी के घर हुआ। आपकी शिक्षा कितलाना, चरखी दादरी एवं पिलानी में हुई। पंडित नेहरू के प्रेरणादायी भाषण से प्रभावित होकर आप अपनी पढ़ाई छोड़कर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और संघर्ष समिति की स्थापना की। स्वतंत्रता आंदोलन में आपको कई बार जेल भी जाना पड़ा।

आजादी के पश्चात बनारसी दास जी ने जींद को भारत में शामिल करने के लिए आंदोलन किया और वहां समानांतर सरकार बनाई। तत्कालीन गृहमंत्री सरदार पटेल द्वारा जींद को पंजाब में सम्मिलित करने के समझौते के बाद ही यह आंदोलन समाप्त हुआ। 1968 के मध्यावधि चुनावो में भिवानी विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए। 1972 में फिर से विधायक बने एवं सर्वसम्मति से विधानसभा अध्यक्ष चुने गए। गुप्ता जी बिजली एवं सिंचाई, कृषि, स्वास्थ्य आदि विभिन्न विभागों के मंत्री रहे। 1975 में इन्हें हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाया गया। 1987 में एक बार फिर भिवानी से विधायक बने और उप-मुख्यमंत्री चुने गए। 1989 में एक बार फिर हरियाणा के उपमुख्यमंत्री रहे। सितम्बर 1990 में आप पर एक जानलेवा हमला भी हुआ। 1996 में आप राज्य सभा के लिये चुने गए।

बनारसी दास जी द्वारा अनेक धार्मिक संस्थाओं की स्थापना की गई। आप अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे। आपके योग प्रेम एवं प्रकृति प्रेम के फलस्वरूप ही भिवानी में प्राकृतिक चिकित्साल्य की स्थापना हुई। आपके सहयोग से भिवानी में कई शैक्षणिक संस्थाएं अस्तित्व में आईं। एक जननेता, समाजसेवी और शिक्षाविद होने के साथ ही आपका एक रूप पत्रकार का भी रहा है जिसे बहुत कम लोग जानते हैं। आप कई वर्षों तक साप्ताहिक 'अपना देश' और 'हरियाणा केशरी' के संपादक रहे। 'पंचायती राज-क्यों और कैसे' के नाम से आपने एक पुस्तक लिखी, जो बहुत लोकप्रिय हुई। विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं से भी आप जुड़े रहे। आपकी अध्यक्षता में हरियाणा प्रदेश साहित्य समिति ने कई उल्लेखनीय कार्य किए। 89 वर्ष की आयु में 10 मई, 2007 को भिवानी का यह सपूत चिरनिद्रा में लीन हो गया।

श्री रामकृष्ण गुप्ता

रामकृष्ण जी का जन्म 27 मई, 1918 को बरनाला (पंजाब) में श्री कांशी राम गुप्ता जी के घर हुआ। आपने शिक्षा की उन्नति, समाज कल्याण एवं मद्यपान निषेध को कारगर बनाने के लिए निरंतर काम किया है। राजनैतिक क्षेत्र में भी आपकी उपस्थिति उल्लेखनीय रही। 1944-45 में अखिल भारतीय छात्र कांग्रेस के संयुक्त सचिव से लेकर महासचिव, पंजाब युवा कांग्रेस के आर्गेनाइजर, जींद राज्य प्रजा मंडल के महासचिव जैसे पद आप संभाल चुके हैं। भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाने के लिये आपको तीन वर्ष का कारावास भी झेलना पड़ा था।

रामकृष्ण जी तीन बार (1955-57, 1957-62, 1967 से 1971) तक संसद सदस्य रह चुके हैं। सन् 1978-79 में आप भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महासचिव रहे। संसद में 98 प्रतिशत उपस्तिथि ने आपकी एक अलग पहचान बनाई। लोकसभा में दाखिल 62764 प्रश्नों में से 6556 प्रश्न गुप्ता जी के नाम से दाखिल हुए। यही नहीं, सदन में दाखिल 4691 प्रस्तावों में 490 प्रस्ताव आपके नाम से थे। अब तक के किसी भी सांसद के लिये यह एक रिकार्ड है। ये बातें आपकी लगन को जगजाहिर कर देती हैं।

रामकृष्ण जी का बचपन बड़ी गरीबी में बीता था। उस समय आपने महसूस किया कि गरीबी एवं लाचार जनसंख्या के साथ कोई भी समाज प्रगति नहीं कर सकता। इसलिये आप गरीब एवं जरूरतमंद की धन, भोजन, किताबों इत्यादि से सहायता करने को सदैव तत्पर रहते हैं। राम कृष्ण जी ने स्वयं को शिक्षा के उत्थान में पूरी तरह से समर्पित कर दिया है। इस समय आपके संरक्षण में चरखी दादरी क्षेत्र में 5 कालेज, 2 प्रबंध संस्थान, 3 विद्यालय और एक अस्पताल की स्थापना हो चुकी है। लगभग 100 करोड़ की लागत से 100 एकड़ क्षेत्र में यह सब संभव हो पाया है। इसी के साथ आप एक इंजीनीयरिंग संस्थान, विधि संस्थान एवं दांतों के मैडिकल कालेज की स्थापना के लिये प्रयासरत हैं।

तिरासी साल की उम्र में भी रामकृष्ण जी विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। आज भी कई सामाजिक संस्थाओं में उन्हें प्रेरणा स्रोत माना जाता है। यह वास्तविकता है कि शिक्षा एवं समाज सेवा में आपका योगदान अति विशिष्ट, अद्वितीय एवं अविस्मरणीय है।

पंडित माधव मिश्र

मिश्र जी का जन्म तत्कालीन पंजाब के हिसार जिले में भिवानी के पास कुंगड़ नामक ग्राम में 1927 को हुआ। आप बड़े ही तेजस्वी, सनातनधर्म के समर्थक तथा भारतीय संस्कृति की रक्षा के सतत अभिलाषी विद्वान थे। आपकी लेखनी में ओज और विद्वता का अद्भुत समावेश था। आपने सरस्वती नामक एक मासिक पत्रिका निकाली, जिसमें आपके प्रेरणादायी लेखों की लोग बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा करते थे। जहां किसी ने कोई ऐसी बात लिखी जो आपको सनातन धर्म के संस्कारों अथवा प्राचीन ग्रन्थों के विरूद्ध और कवियों के गौरव को कम करने वाली लगी तो उसका जवाब आप अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से देते थे।

मिश्र जी एक सच्चे देशभक्त थे। जनता की बात सत्ताधारियों तक पहुंचाने के लिए शुरू हुए राजनीतिक आंदोलनों में आपकी हमेशा बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी। आपने स्वामी विशुद्धानन्द जी के जीवन चरित्र के अतिरिक्त और भी कई लोगों की लघु जीवनियां लिखीं, जिनमें कुछ संस्कृत के विद्वान थे तो कुछ सनातनधर्म के सहायक सेठ-साहूकार आदि। 'सुदर्शन' में इनके लेख प्राय: सब विषयों पर निकलते थे- जैसे पर्व, त्यौहार, उत्सव, तीर्थ स्थान, यात्रा, राजनीति, इत्यादि। लोक व्यवहार से जुड़े विषयों पर मिश्र जी के दो लेख बड़े प्रसिद्ध हैं- धृति और छमा।

भिवानी के इस प्रभावशाली लेखक/संपादक की उज्जवल आभा हिन्दी साहित्य जगत में बड़े अल्पकाल के लिए ही रही। अपनी सक्रियता के चरम सोपान पर आपकी प्लेग से असमय मृत्यु हो गई।

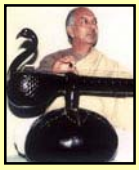

पंडित गोपाल कृष्ण

अध्यात्मिक आभा एवं सादगी से परिपूर्ण पंडित गोपाल कृष्ण एक पुरातन और अनूठे भारतीय वाद्ययंत्र वीणा के विशेषज्ञ थे। आपका जन्म भिवानी में एक प्रख्यात सुर-बहार वादक और गायक पंडित नंद किशोर जी के घर हुआ। पिता एवं पंडित खूबचंद ब्रह्मचारी के मार्गदर्शन में आपने संगीत की प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की। आगे चलकर अपने संगीत ज्ञान को और प्रखर बनाने के लिए गोपाल कृष्ण जी ने महान सितार वादक पंडित रविशंकर जी को अपना गुरु बनाया। शीघ्र ही आपकी गणना उनके प्रमुख शिष्यों में होने लगी।

पंडित जी एक बहुमुखी प्रतिभा के संगीतकार थे। विचित्र वीणा के साथ-साथ वे जलतरंग, गिटार और इकतारा में भी सिद्धहस्त थे। सन् 1949 में आपका संपर्क आकाशवाणी से हुआ। यहां आपके द्वारा प्रस्तुत किए गए कार्यक्रम राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लाखों लोगों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। पंडित जी के संगीत की सुगंध हिंदुस्तान के अलावा पाकिस्तान, नेपाल, अफगानिस्तान, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका तथा कनाडा जैसे देशों तक भी पहुंची। राग की गहरी जानकारी तथा वाद्ययंत्रों की सूक्ष्म जानकारी आपके संगीत की विशेषता रही। संगीत के परम्परावादी मूल्यों और आधुनिक दृष्टिकोण के बीच तालमेल बिठाते हुए आपने विचित्र वीणा की कई नई पद्धतियां विकसित कीं।

पंडित गोपाल जी 'झाला' नामक तकनीक में विशेषता रखते थे। संगीत की दुनिया में प्राय: कहा जाता है कि एक शेर को पालतू बनाया जा सकता है पर वीणा को नहीं। लेकिन पंडित गोपाल कृष्ण जी ने यह दुर्लभ कार्य कर लिया था।

श्री सुरजीत सिंह

श्री सुरजीत सिंह का जन्म 10 जुलाई 1919 को भिवानी के एक किसान, ठाकुर आशा सिंह के घर हुआ। 1946 मे आपकी नियुक्ति भिवानी के ही वैश्य स्कूल मे पी.टी. आई अध्यापक के रूप मे हुई। सुरजीत सिंह अपने विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने में माहिर थे। उनकी अथक मेहनत के परिणाम स्वरूप भिवानी से अनेक अन्तरराष्ट्रीय खिलाड़ी तैयार हुए। ऐसा नहीं था कि सुरजीत जी का दायरा एक या दो खेलों तक सीमित था। सच कहा जाए तो उनके मार्गदर्शन में हर खेल के खिलाड़ी ने अपनी क्षमताओं को पहचाना। पोलवाल्ट जेवलिन थ्रो, डिस्कस थ्रो, शाटपुट, लोंग जम्प, हाई जम्प, त्रिकूद, सभी में आपके खिलाड़ियों ने नए-नए रिकार्ड बनाये। आपके योगदान को देखते हुए राज्य सरकार ने कई मौकों पर आपको सम्मानित किया। सुरजीत जी द्वारा तैयार अनेक खिलाड़ी आज भारतीय रेल मे सेवारत हैं। जी टीवी ने आपके जीवन पर एक वृत्तचित्र बनाकर कई बार प्रसारित किया है। वास्तव मे आप भिवानी जिले में खेलों के विकास के जनक थे।

श्री फकीरचंद

फकीर चंद जी दादरी के रहने वाले थे। आपने अपना पूरा जीवन सामाजिक भलाई के कामों में लगा दिया। अन्नदान को वे महादान की संज्ञा देते थे। कोई भूखा सोए, यह उनके लिए असहनीय था। अपने जीवनकाल में उन्होंने सामाजिक सहयोग से कई विशाल भंडारे आयोजित किए। उनके भंडारों में किसी भी जाति या धर्म का व्यक्ति आकर अपनी भूख मिटा सकता था। दादरी रेलवे स्टेशन पर आपके जीवनकाल में शुरू किया गया भंडारा आज भी अनवरत चल रहा है। यह भंडारा सभी के लिए हमेशा खुला रहता है। फकीर चंद जी 'सादा जीवन उच्च विचार' की परंपरा वाले व्यक्ति थे। सेवा के क्षेत्र में आपने जो मानदंड स्थापित किए हैं, वह प्रत्येक भारतीय के लिए अनुकरणीय हैं।

पंडित नेकीराम शर्मा

पंडित नेकी राम शर्मा जी का जन्म सन् 1877 में केलंगा में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपने देश की स्वाधीनता के लिये निरंतर योगदान दिया। आपने बनारस से संस्कृत की शिक्षा ग्रहण की। हरियाणा में 'होम रूल' आंदोलन में आपका योगदान बहुत उल्लेखनीय है। आप लोकमान्य तिलक के भाषणों से प्रभावित होकर 'स्वराज संघ' के सदस्य बन गये। लाला लाजपत राय के निर्वासन से आप काफी भावुक हुए तथा प्रतिज्ञा की कि जब तक ब्रिटिश शासन खत्म नहीं हो जाता, वह चैन से नहीं बैठेंगे। सन् 1917 के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में आपने हरियाणा का प्रतिनिधित्व किया। तत्कालीन रोहतक के ब्रिटिश उपायुक्त ने उन्हें जमीन का प्रलोभन देने की कोशिश की परंतु उन्होंने कहा कि पूरा देश हमारा है तथा हम तुम्हें देश से धक्का मारकर बाहर निकाल देंगे। आपको सन 1918 में गिरफ्तार किया गया लेकिन केस जीतने के बाद रिहा कर दिया गया। सन् 1922 में असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण 6 महीने जेल में रखा गया। सन् 1922 से 1930 तक आपने हरियाणा के अनेक गावों का दौरा किया तथा कांग्रेस समितियाँ बनायी। आपने पंडित मदन मोहन मालवीय और लाला लाजपत राय जी के साथ कई वर्षों तक कार्य किया। आपने भिवानी से 'संदेश' नामक अख़बार का प्रकाशन भी किया। आप एक सामाजिक कार्यकर्ता भी रहे और समाज की विभिन्न कुरीतियों को दूर करने में अपना योगदान दिया। जात.पात, बाल विवाह, पर्दा प्रथा आदि अनेक बुराइयों पर आपने प्रहार किया। आप हरियाणा में सनातन धर्म सभा के निष्ठावान योद्धा रहे हैं। जून 1956 में आपका देहांत हो गया। देश की आजादी में आपका योगदान हमेशा अविस्मरणीय रहेगा।